कबीरः– मानवतावादी समाजसुधारक

प्रेमवती[1], डॉ अब्दुल लतीफ[2]

[1]शोधार्थिनी हिन्दी, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर उत्तर प्रदेश, इंडिया

[2]शोध पर्यवेक्षक एवं असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, राजकीय रजा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रामपुर उत्तर प्रदेश, इंडिया

Author Email: palm03386@gmail.com

जिस समय कबीरदास जी का अविर्भाव हुआ। उस समय भारत देश में भक्ति आन्दोलन की लहर प्रवल थी। हिन्दू–मुसलमानों में मतभेद चरम सीमा पर था। मुसलमानो के आगमान से हिन्दू समाज पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। उस समय समाज में अनेक प्रकार की बुराइयाँ व्याप्त थी। जैसे जातिगत भेदभाव हिंसा, साम्प्रदायिकता, धार्मिक पाखण्ड, छुआछुत, ऊँच–नीच रूढिवादी, अन्धविश्वास आदि। कबीरदास ने समाज में फैली इन बुराइयों को दूर करने के लिए जो मार्ग अपनाया वैसा किसी भी साधु–सन्त और भक्त ने नही अपनाया।यह कहना गलत नही होगा कि कबीर जैसा समाज सुधारक एंव मानवतावाद की स्थापना करने वाला निर्गुण भक्त कवियों में दुसरा कोई नही हुआ कबीर का स्थान सर्वोपरि है। कबीरदास जी ने मानव कल्याण के लिए समन्वयवादी दृष्टि अपनायी,

तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों एंव विसगतियों को दूर करने का प्रयास किया। कबीरदास जी सभी प्रकार के वाह्य धर्म–आंड़बरों को अस्वीकार करने का अपार साहस लेकर धर्म साधन के क्षेत्र में आए। अस्वीकार करना करना कोई बड़ी बात नही है। कोई भी किसी को अस्वीकार कर सकता है, उसके कार्यों की अवहेलना भी कर सकता है। जब कोई किसी बहुत बड़े उद्देश्य के लिए बाधाओं को अस्वीकार करता है, तो वह बड़े साहस का कार्य माना जाता है बिना उद्देश्य के किया गया बिद्रोह विनासकारी होता है, लेकिन साधु–महात्माओं के उद्देश्य से प्रेरित बिद्रोह एक प्रकार से वीर धर्म की श्रेणी में आता है।

कबीरदास जी ने अपने अटल विश्वास के साथ अपने प्रेम–मार्ग को प्रतिपादित किया। हम यह नही कह सकते, कि उन्होंने समाज में फैले अन्धविश्वास, रूढियों, बुराइयों आदि को न झेला हो या उनके मार्ग में परेशानियाँ न आयी हो, अनेक प्रकार के प्रलोभनों ने उनके रास्ते में रूकावट पैदा की होगी, अनेक प्रकार के अघात, काम, क्रोध भी उनके मार्ग में आयें उन्होंने बड़ें धैर्य एंव साहस के साथ उन सबका सामना किया।

समाज में फैली अज्ञानता को दूर करने के लिए कबीर ने जितनी स्पष्ट और कठोर भाषा का प्रयोग किया है उतना किसी भी सन्त–महात्मा ने नही किया।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपनी पुस्तक ''कबीर'' में कबीर दास जी के बारे में कहा है–

भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा लिया बन गया है तो सीधे–सीधे नही तो दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर सामने लाचार नजर आती है उसमें मानों ऐसी हिम्मत ही नही है कि इस लापरवा फक्कड़ की किसी फरमाइश को नाहीं कर सकें।

क्बीरदास जी की कठोरता में उनकी अटूट दृढ़ निष्ठा छिपी हुई है वे बिना किसी लाग लपेट के अपने बिचारों को सबके सामने रखते हैं। ऐसा सच्चा साहस एक उच्च कोटि के मानवतावादी समाजसुधारक में ही हो सकता है।

मध्यकालीन जैसे युग में जब स्थिति अत्यन्त भयावह थी तब उन्होंने समाज को सही मार्ग पर लाने का बीड़ा उठाया इतने साहस का कार्य कोई मामूली क्षमता बाला व्यक्ति नही कर सकता इसके लिए अखण्ड विश्वास अदम्य साहस होना चाहिए जो कबीर में कूट कूटकर भरा था इस अदभुत वीरता को उन्होंने क्षण भर के लिए नही रूकने दिया,ज्ञान

रूपी तलवार को उन्होने कभी नही रूकने दिया ज्ञान की धारा आजीवन बहती रही जो कबीर के इस दोहे में द्रष्टव्य है :–

जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिये ज्ञान।

मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो म्यान ।। „

प्रेम और स्नेह को कबीरदास जी ने कभी नही छोड़ा यह उनका आभूषण था। कबीर दास जी यथार्थ रूप में ईश्वर भक्ति के साथ सुख–शान्ति पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे, किन्तु उन्होंने अपने चारो तरफ धर्म के नाम पर आपस में लड़ते झगड़ते देखा, मनुष्य का मनुष्य के साथ भेदभाव, वर्गभेद, दुख दरिद्रता, छल कपट आदि को देखकर वह अपने को भूलकर मानव का दुख दर्द दूर करने में लग गये। कबीर यह भी भूल गये कि वह जिस समाज मे रह रहें है। उसमें सुधार करना आसान नही हैं। लेकिन उन्होंनें इन सब बातों को भूलकर मानवजाति के दुखों के बंधन को काटने का बीड़ा उठा लिया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में लिखा हैं:–
''कबीर स्वभाव से संत परिस्थिति से समाज–सुधारक विवसता से कवि थे ''।

वह हिन्दू–मुसलमानों कें अन्धविश्वास पर प्रहार करते समय यह भूल जाते थे, कि उनकी कठोर वाणी से प्रेम–मार्ग की आशा करने वाली जनता इस प्रकार से तिलमिला उठेगी। कबीरदास जी तो यह सबकुछ जानबूझकर करते थे, उनका लक्ष्य केवल जाति में एकता और समानता स्थापित करना नही था,कबीरदास के जीवन का मुख्य लक्ष्य सम्पूर्ण मानव जाति को एकता और समानता के सूत्र में बांधना था।

मानवतावाद और भक्ति का अविर्भाव कबीर से पहले नारद और शंडिल्य के भक्ति– सूत्रों में देखने को मिलता है। जो मात्र पुस्तकीय ज्ञान था और शिक्षित वर्ग तक सीमित रह गया,जो जन सामान्य की पहुंच से दूर रहा, मानवता का समावेश रामानंद की शिष्य परम्परा में दिखाई दिया, क्योंकि रामानंद ने अपनी शिष्य परम्परा में उन लोगों को भी सम्मिलित किया ,जो समाज में निम्न वर्ग के समझे जाते थे। तब भक्ति मार्ग में यथार्थ रूप से मानवतावादी दृष्टिकोण उभर कर सामने आया। कबीरदास जी ने इसी मानवतावादी विचारधारा को समाज के व्यापक फलक पर उतारा। मानवतावाद में विश्वास रखने वाला व्यक्ति ही सच्चे अर्थो में सभ्य पुरूष की श्रेणी में आता हैं। कबीर सच्चे मानवतावादी थे। कबीरदास जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन जनता का दुख–दर्द दूर करने में लगा दिया। कबीरदास जी का जीवन अन्तिम समय तक जनता के उदबोधन में ही व्यतीत हुआ। कबीरदास जी ने अपनी कभी चिंता नही की वे समाज के दुख को लेकर ही हमेशा चिन्तित दिखे। कबीरदास संसार के लिए ही विलाप करते रहे, उन्होने साईं के जीवों के लिए ही अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया, कबीरदास ही ऐसे महान पुरूष हुए जिन्होंने इस संसार के लिए अपने को मिटा दिया।

''सुखिया सब संसार हैं, खावै अरू सौवे।
दुखिया दास कबीर है, जागै अरू रौवे।''

कबीर ने हिन्दू–मुसलमान दोनों के जीवन को देखा और उन दोनों के जीवन के खोखलेपन को समझा कि दोनों धर्म के लोग सत्य से दूर हैं। दोनों ईश्वर को मानने वाले है, पर दोनों एक दूसरे को भेदभाव की दृष्टि से देखते हैं। दोनों ज्ञान बॉटते फिरते थे, पर दोनों धर्मों के लोगों का ज्ञान शास्त्रों, कुरान के पन्नों तक सिमटकर रह गया था। धर्म गुरूओं की कट्टरता ने हिन्दू–मुसलमान के बीच दीवार खडी कर दी थी। कबीर ऐसा मार्ग स्थापित करना चाहते थे, जिसमें दोनों ईश्वर मे विश्वास कर उनके महत्व को समझें और दोनों धर्मों के आपसी झगड़े समाप्त हो सकें, इसके लिए कबीरदास जी ने पंडित, मुल्ला,काजी इन सभी धर्म के ठेकेदारों को सत्य का रास्ता दिखायाः–

''हिन्दू कहे मोहि राम पियारा,तुर्क कहे रहमाना।
आपस में दोऊ लड़ी–लड़ी मुए, मरम न कोई जाना''।।

कबीर प्रखर प्रतिभाशाली विचारक थे, उन्होने अनुभव किया कि दोनों धर्मों की सभ्यतायें आपस में टकरा रही हैं, तब उन्होंने कहा प्रकृति ने सबको समान समझा है, भेद तो मनुष्य ने मनुष्य के बीच उत्पन्न किया। जन्म से न कोई छोटा होता हैं न कोई बड़ा होता है। व्यक्ति अपने कर्मों से छोटा बड़ा बनता है, हमें अच्छे कर्म करना चाहिए। कोई भी धर्म भेद करना नही सिखाता। कभी कोई धर्म यह नही कहता, कि आपस में वैर करो या मन्दिर–मस्जिद के नाम

पर झगड़ों ईश्वर–अल्लाह दोनों एक हैं और सब जगह व्याप्त हैं। ईश्वर एक सत्य हैं और मुक्ति प्रदान करने वाला है, ह्रदय की पवित्रता ही जीवन और धर्म का मूल हैं। कबीर ने जीवन के सार को समझा जीवन का सार सत्य में हैं वाह्य– आडम्वर एवं छल कपट में नही। मुनष्य की एकता के लिए वे सदा प्रयासरत रहे, उनका कहना था कि मानवजाति को आपस में मिलकर रहना चाहिए। आपस में मिलकर रहना ही पृथ्वी का सबसे बड़ा सुख हैं। जब कबीर ने अपने युग में मनुष्य के इस सुख को छिन्न–भिन्न होते देखा, तो इसकी सुरक्षा करना उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। कबीर ने सभी धर्मों के लोगो के मन से सभी प्रकार के भेदभाव दूर करने का अथक प्रयास किया। छोटे–मोटे सासांरिक झगडो को समाप्त कर ज्ञान की ओर प्रेरित किया। उन्होनें ने कहा धर्म या ईश्वर के नाम पर लड़ने में अध्यात्म नहीं है अध्यात्म तो ईश्वर के प्रति समर्पण भाव रखने में हैं। और उसकी सच्ची भक्ति करने में हैं।उन्होने भक्ति को महत्व देते हुए कहा हैंः–

"भक्ति बिन नहिं निस्तरे लाख करे जो कोय।
शब्द सनेही होय रहे, घर को पहुंचे सोय"।।

कबीरदास जी ऐसे महान बीर पुरूष हुए, जो हमेशा अपना सिर हथेली पर रखकर अपने भाग्य का सामना करने निकले थे। क्षणभर के लिए भी वह विचलित नही हुए।

दादू दयाल ने अपने एक प्रसिद्ध दोहे में कबीर के बारे में कहा हैंः–
"अपना मस्तक काटि कै वीर हुआ कबीर"।।

कबीरदास जी ने मजहब के नाम पर लड़ने वालों के प्रति कठोर रूख अपनाया, समाज में मिथ्या आडंबर फैलाने वालों की जो फटकार कबीर ने लगायी उस समय के किसी सन्त–महात्मा ने इतना साहस नही दिखाया। कबीरदास ने निष्पक्ष होकर हिन्दू–मुसलमानों के आपस के भेदभाव पर कठोर प्रहार किया। उनकी मान्यता थी सभी मनुष्यों की उत्पति एक ज्योति से हुई हैं। और सब एक ही ईश्वर की सन्तानें हैं।जब ईश्वर और प्रकृति ने किसी प्रकार का भेदभाव नही किया हैं,तो हम मनुष्य आपस में क्यो करें। उन्होने कहा कि मनुष्य ने स्वयं आपस में ऊंच –नीच की खाई खोदकर घृणा के बीज बोये हैं।जो नितान्त गलत हैं।

डा0 बच्चन सिहं ने अपने ग्रन्थ–हिन्दी साहित्य का दुसरा इतिहास, में लिखा हैंः–
"वे एक ऐसे धर्म की स्थापना करना चाहते थे जिसमें न कोई हिन्दू हो न मुसलमान न कोई मौलवी हो न पुरोहित न कोई शेख हो न वरहमन सब मनुष्य हो"

कबीरदास ने देखा कि हिन्दू–मुसलमान के बीच ही तनाव नही है। हिन्दुओं के बीच भी आपस में छुआछूत अस्पृश्यता का एवं ऊंच–नीच का भेदभाव था। जिसे लेकर अक्सर उनमें तनाव की स्थिति रहती थी ब्राहमण, क्षत्रिय, शूद्र आदि आये दिन लड़ते–झगड़ते रहते थे। हिन्दू समाज में भी अपने से एक नीची जाति ढूंढ लेते और उससे नीच समझी जाने वाली जाति को हीन दृष्टि से देखते और अपने को उससे श्रेष्ठ समझते। कबीरदास ने इन बातो को कभी स्वीकार नही किया और इसका प्रबल विरोध किया।

जो उनके इस दोहे से दृष्टव्य हैः–

"एक बूंद एक मल–मूतर, एक चाम एक गूंदा।
एक जोति मै सब उपजा, कौन ब्राहाम्न कौन सूदा"।

सच्चा मानवतावादी व समाज सुधारक व्यक्ति कभी भी समाज में इस प्रकार की ओछी संकीर्ण भावना को पनपते नही देख सकता है। फिर कबीरदास जैसे निडर और सत्यवादी पुरूष समाज में इस प्रकार के कलंक को कैसे सहन कर लेते। उन्होनें इसके प्रति कठोर रवैये को अपनाया और इस प्रकार के सामाजिक कलंक को मिटाने का दृढ़ निश्चय किया। कबीरदास का मानना था, कि कोई भी जन्म से न छोटा होता है और बड़ा सब समान रूप से पैदा होते है। अतः उन्होनें जन्मजात जाति को स्वीकार नही किया। उनकी वाणी में एक ही स्वर गूंजता रहा कि हम सब समान है और सब को आपस में मिलकर प्रेम और भाईचारे के साथ रहना चाहिए। सब हरि के सेवक हैं।

जो भाव कबीरदास के इस दोहे में व्यक्त होता हैंः–

" कबीर हरि सब कूं भजै, हरि को भजै न कोई।
जब लग आस सरीर की, तब लग दास न होई"।।

कबीर स्वछन्दता वादी विचारक थे । वे मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ–साथ समाज में सुधार लाना चाहते थे। उन्होने समाज में बाधा उत्पन्न करने वाली रूढ़ियों का विरोध किया, बाहरी आडम्बरों को बढ़ावा देने वाले धर्म के

ठेकेदारों की फटकार लगायी। पांडे–पुजारियों, ढोगी, साधु, फकीरों मुल्लाओं का कबीर ने डटकर विरोध किया। कबीर का सम्पूर्ण साहित्य समाज–सुधार एवं मानव कल्याण की भावना से प्रेरित है। कबीर ने हिन्दू–मुसलमान दोनों की पाखण्ड पूर्ण नीति का खण्डन कर सच्चाई के मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया। समाज द्वारा अज्ञानवश अपनायी गयी रूढ़ियां एवं कुप्रथाएं कबीर को बहुत खटकती थी। कबीर रूढ़ियों, कुप्रथाओं की आलोचना करने के लिये विवश हो जाते थे। रोजा, तीर्थ, व्रत मूर्तिपूजा आदि का कबीर ने घोर विरोध किया। कबीरदास ने मुसलमानों की अजान–प्रथा का तीव्र विरोध किया है। अजान का विरोध करते हुए कबीर कहते हैः–

''काकर पाथर जोरि कै, मस्जिद लई चुनाए।
ता चढ़ मुल्ला वांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय''।।

कबीरदास ने तीर्थ यात्रा, गंगा स्नान व्रत आदि का डटकर विरोध किया। उन्होनें कहा कि तीर्थ यात्रा करने से हम सुख का अनुभव तो कर सकते हैं। लेकिन ईश्वर को प्राप्त नही कर सकते ईश्वर प्राप्ति के लिये कहीं जाने की जरूरत नही है। ईश्वर तो हमारे अन्दर निवास करता है, अगर जरूरत है तो उसे पहचानने की, कबीरदास ने कहा अगर गंगा में स्नान करने से मोक्ष प्राप्त हो जाये तो फिर मछली, मेंढक को मोक्ष क्यों प्राप्त नही होती, उनका तो निवास स्थान ही गंगा है। कबीरदास ने मूर्तिपूजा का भी विरोध किया है। उन्होनें कहा हैः–

''पाहन पूजें हरि मिले, मै तो पूजूं पहार।

याते चाकी भली, जो पीस खाय संसार''।।

कबीरदास ने छापा, तिलक, माला फेरने वाले है ढोगियों की खूब फटकार लगायी। कबीरदास कहते है कि जो लोग दिखावे के लिये तिलक लगाकर गेरूआ वस्त्र धारण कर लेते है, इससे मुक्ति प्राप्त नही होगी। मोक्ष प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपने हृदय को पवित्र करना होगा न कि ऊपर का वेश बनाने से कबीर ने ऐसे लोगों पर व्यंग करते हुए कहा हैंः–

''जप माला छापा तिलक, सैर न एकौ कामु।

मन–काँचै नाच वृथा, साचै रांचै रामु''।।

कीबरदास ने मुसलमानों पर तीखा प्रहार करते हुये कहा कि रोजा रखने से क्या खुदा प्रसन्न होगा, जबकि साथ–साथ तुम जीव हत्या कर रहे हो। कबीरदास ने मुसलमानों के इस खोखलेपन का विरोध किया और उन पर व्यंग कसाः–

''दिन भर रोजा रखत, रात हनत दे गाय।

यह तो खून व बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय''।।

इस प्रकार हम देख सकते है कि कबीर जीव हिंसा के सख्त विरोधी थे। उनका मानना था हम सब ईश्वर के जीव है, और एक जीव को दूसरे जीव की हत्या करने का कोई अधिकार नही है। कबीरदास ऐसे युग में उत्पन्न हुए जहां की परिस्थितियां बहुत विषम थी चारों तरफ पाखंड का बोलवाला था। कबीरदास ने दोनों धर्मों के पाखण्ड आडम्बर को बड़े निकट से देखा–परखा फिर हिन्दू–मुसलमानों को इस बात का अनुभव कराया कि हमें सांसारिक स्वार्थो को भूलकर सत्य के परम यथार्थ को ग्रहण करते हुये विवेक युक्त विचारधारा की ओर अग्रसर होना चाहिए।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'कबीर' में इनके बारे में कहा हैः–

''समाज सुधारक के रूप में सर्व धर्म समन्वय कारी के रूप में हिन्दू–मुस्लिम ऐक्य –विधायक के रूप में विशेष संप्रदाय के प्रतिष्ठाता के रूप में और वेदांत व्याख्याता दार्शनिक के रूप में भी उनकी चर्चा कम नहीं हुई है''।

उपर्युक्त विवेचना से यह तो साफ स्पष्ट होता है, कि कबीर सच्चे अर्थो में मानवतावादी समाज सुधारक थे। कबीरदास जी ने खंडनात्मक शैली में जो कुछ कहा है। वह मानवता का ही सन्देश देता है। कुछ आलोचक इनकी प्रखरता को देखते हुए, इन्हें केवल समाज सुधारक मानते है जो उनकी भावनाओं के साथ तालमेल नही बिठाता है। कबीर सच्चे

अर्थों में मानवतावादी समाज सुधारक थे। कबीर किसी जाति या धर्म में बंधे हुए नहीं थे। उन्होनें समाज सुधार के लिये संसार में फैली बुराईयों का तीव्र स्वर में विरोध किया और जनता को सत्य का मार्ग दिखाने की चेष्टा की कबीर के समय में मुगलों का शासन था। उस समय राज्य धर्म या मुगलों के खिलाफ बोलने पर दण्ड दिया जाता था। फिर भी कबीर ने ऐसे समय में भी रोजा, अजान, मुल्ला, मुसलमान, आदि पर कठोर वाणी में प्रहार किया। कबीर का उद्देश्य किसी को गाली देना या अहित करना नही था। उनका उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराईयों को दूर कर एक साफ सुथरा सभ्य समाज की स्थापना करना था। कबीरदास कहने से ज्यादा करने में विश्वास रखते थे।

" कथनी कथी तो क्या भया, जो करणीं ना ठहराइ।

काल दूत के कोट, क्यों देखते ही ढह जाइ।।"

"जैसी मुखते नीकसे, तैसी चाले चाल।

पर ब्रहमा नेड़ा रहे , पल में करे निहाल"।।

कबीर के साहित्य का अनुशीलन यदि किया जाये तो उनके साहित्य में समाज–सुधार मानवता के दर्शन ही होगें। कबीर के समय में सामाजिक परिस्थितियां जिस प्रकार छिन्न–भिन्न होकर अस्त–व्यस्त होती जा रही थी। कबीर ने अपनी मानवीय संवेदना के द्वारा काफी हद तक उनमें सुधार किया। यह कहना गलत नही होगा, कि उस युग में सामाजिक विकृतियां काफी हद तक अपनी जड़े जमा चुकी थीं। चारों तरफ मानवता का गला घोंटा जा रहा था। मुगलों का शासन बड़ा क्रूर था। ऐसे समय में कबीर ने सभी प्रकार के भय से मुक्त होकर अपनी आवाज को बुलंद किया, हालाकि उनको इसकी कीमत चुकानी पड़ी थी।

कबीर के बारे में डा0 बच्चन सिंह ने अपने इतिहास ग्रन्थ "हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास" में कहा हैः–

कबीर ने जो कुछ किया, उसके पीछे एक परंपरा है। इतिहास की एक सामंती मंजिल है, मुल्ला, पंडितों का वर्चस्व है। किन्तु कबीर के व्यक्तित्व में वह ताकत थी, जिससे सामंती व्यवस्था के इन सरमायेदारों की मूर्ति तोड़ने में वे एक सीमा तक सफल हुए। लेकिन इसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी।

अतः हम संक्षेप शब्दो में कह सकते है, कि कबीर सच्चे अर्थो में उच्चकोटि के मानवतावादी समाज–सुधारक थे। उनका सम्पूर्ण जीवन मानव जाति का उपकार करने में व्यतीत हुआ। कबीर का योगदान हमारे सभ्य समाज में अविस्मरणीय रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दास, श्यामसुन्दर, कबीर ग्रन्थावली, प्रकाशन वर्ष–2009, प्रकाशकः– प्रकाशन परिवार द्वारा प्रकाषित तथा लोकभारती पुस्तक –विक्रेता तथा वितरक 15–ए, महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद –1 द्वारा वितरित, पृष्ठ संख्या–15
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद, कबीर, प्रकाशन वर्ष – पच्चीसवां संस्करण 2020, प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्रा0लि0 1– बी नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली– 110002 पृष्ठ संख्या : 146
3. वही– पृष्ठ संख्या 170
4. शुक्ल, रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन वर्ष–2002 प्रकाशकः नमन प्रकाशन 4378/4 बी, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली।
5. सिंह, बच्चन, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, प्रकाशन वर्ष –संस्करण नौवां 2017, प्रकाशकः राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड 7/31 अंसारी मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली–110 002, पृष्ठ संख्याः 83
6. वही – पृष्ठ संख्या 84
7. स्नातक, विजयेन्द्र, कबीर संपादक, प्रकाशन वर्ष – 2019, प्रकाषक–राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड जी–17 जगतपुरी दिल्ली – 110 051 पृष्ठ संख्या : 238 ही पृष्ठ संख्या 239
8. वही– पृष्ठ संख्या 239